महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

स्थापित २००५ ई.

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : .....

दिनांक : 28.08.2016

प्रकाशनार्थ

शिक्षा वर्तमान में मनुष्य को अनपढ़ बना रही है, संवेदनहीन बना रही है, भौतिकतावादी एवं उपभोगवादी बना रही है। मनुष्य बनाने वाली शिक्षा का अभाव एक बड़ी चुनौती है। इसके लिए विकास की अवधारणा बदलनी होगी। विकास को मात्र आर्थिक समृद्धि का नहीं मानवीय मूल्यों के विकास का भी सूचक बनाना होगा। **उक्त बातें महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़ में चल रही सप्तदिवसीय राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ स्मृति व्याख्यान माला के तीसरे दिन 'शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य : एक मूल्यांकन' विषय पर बोलते हुए मुख्य वक्ता बिहार विश्वविद्यालय मुज्जफ्फरपुर के दर्शनशास्त्र के प्रो. एस. के. वर्मा ने कही।**

उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा के दो पक्ष होते हैं- एक आन्तरिक, जिसमें पाठ्यक्रम आता है और दूसरा बाह्य, जिसमें पद्धति आती है। यह दूसरा पक्ष पहले से तय होता है। यानी पाठ्यक्रम से पद्धति निर्धारित होती है। क्या पढ़ना है, इस पर निर्भर करता है कि उसे कैसे पढ़ाया जाये? इसलिए जिस विधि से विज्ञान पढ़ाया जाता है, उसी विधि से कला नहीं पढ़ाई जा सकती; ठीक वैसे ही जैसे जिस तरीके से तर्क किया जाता है, उसी तरीके से प्रेम नहीं किया जा सकता। विषय के हिसाब से विधि बदल जाती है। इसलिए शिक्षा पर विचार करते वक्त सबसे पहले इस पर विचार किया जाना जरूरी है कि पढ़ाया क्या जाये? यानी पाठ्यक्रम क्या हो?

यही सवाल शिक्षा का उद्देश्य तय करता है। आखिर हमें शिक्षा क्यों चाहिए? हम शिक्षित होकर क्या करेंगे? शिक्षा हममें कौन-सी तब्दीली लायेगी? इससे हमारी किस समस्या का समाधान होने वाला है? यह सवाल आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है जितना उस दिन रहा होगा, जिस दिन पहली बार किसी ने शिक्षा की आवश्यकता महसूस की होगी। और इसका जवाब आज भी वही होगा, जो सम्भवतः उस दिन दिया गया होगा कि शिक्षा मनुष्य को विकसित करती है। उसे सभ्य बनाती है। सामाजिक बनाती है। यानी कुल मिलाकर उसे सही ढंग से जीना सिखाती है।

व्याख्यान माला का संचालन डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव ने किया। महाविद्यालय की छात्राओं वर्षा, आकांक्षा, रमा पाण्डेय, दीपिका मिश्रा आदि द्वारा सरस्वती वन्दना एवं वन्देमातरम् प्रस्तुत किया गया। व्याख्यान माला में डॉ. वीरेन्द्र तिवारी, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, श्रीमती पुष्पा निषाद, श्री गोविन्द वर्मा, श्री सुबोध कुमार मिश्र, श्री विनय कुमार सिंह, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, डॉ. कविता मन्ध्यान, डॉ. अपर्णा मिश्रा, डॉ. प्रज्ञेश मिश्र, डॉ. मृत्युन्जय सिंह, डॉ. अभिषेक वर्मा, डॉ. शैलेन्द्र ठाकुर, सुश्री दिप्ती गुप्ता, डॉ. कंचन सिंह सहित महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

(डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी)

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी